***ज्ञान प्रकाश (शोध छात्र)**

शिक्षक शिक्षा विभाग

****डॉ सरफराज अहमद**

शिक्षक शिक्षा विभाग

हलीम मुस्लिम पीजी कॉलेज, सी.एस.जे.एम विश्वविद्यालय कानपुर उत्तर प्रदेश।

विषय-भारतीय ज्ञान परंपरा और आधुनिक चिंतन के सन्दर्भ में शिक्षक शिक्षा एवं विज्ञान तकनीकी के आयामों का सामाजिक पूँजी के परिप्रेक्ष्य में अध्ययन

सारांश

भारत केवल ऐतिहासिक देश ही नहीं रहा है, बल्कि विश्व के समक्ष ज्ञान की दुनिया का प्रतीक रहा है। जिसकी ज्ञान परंपरा का स्थानांतरण विभिन्न आयामों में आगे बढ़ता रहा है। ज्ञान स्थानांतरण के कार्य को विद्वान, साहित्यकार, चिंतनकर और बुद्धिजीवी वर्ग के द्वारा किया गया है| जो सामाजिक पूँजी का विषय था| सामाजिक पूँजी[1] सूचना-संप्रेषण का मार्ग होती है। जिसमें मूल्य, संस्कृति और विरासत को बचाना एवं नए ज्ञान के साथ समावेशित करके आगामी पीढ़ियों को उस ज्ञान में समृद्ध करना। आज जब हम अपनी भारतीय ज्ञान परंपरा के अतीत को खोजने का प्रयास कर रहे हैं, तो देखते हैं कि हमारी ज्ञान परंपरा प्रकृति और संस्कृति के बहुत करीब रही हैं। मानवीय मूल्य, मानवता, उदार हृदय, सहयोग, सहानुभति एवं उच्च चरित्र और आपसी मानव संबंधों की एक अनुपम परंपरा रही है। सभ्यता के विकास के साथ-साथ जैसे ही मानव समाज की आवश्यकता बड़ी, वैसे-वैसे भारतीय ज्ञान परंपरा को अपने अद्यतन आवश्यकताओं के साथ समावेश करने में चूक हो गई| जबकि प्राचीन काल में भारत चिंतन के मामले में अग्रणी था| लेकिन अब ऐसी स्थिति नहीं है,फिर भी पिछली दो पीढियों में चिंतन के क्षेत्र में कुछ ना कुछ हो रहा है| भारतीय चिंतन में नवयुग की शुरुआत करने वाले राजा राममोहनराय पश्चात चिंतन को प्रमाणित करते हुए भारतीय चिंतन परंपरा पर मनन किया और प्रतिस्थापित करने का सार्थक प्रयास किया| चिंतन और कर्म की एकता पर बल देते हुए चिंतन को रविंद्र नाथ ठाकुर और महाराजा अरविंद ने विभिन्न आयाम बताएं| गांधी दर्शन ही कर्म से निकाला और महात्मा के दर्शन ने समकालीन विश्व को प्रभावित किया| सर्वपल्ली

[1]Navdeep Kaur Department of Commerce, Delhi School of Economics, Delhi University, New Delhi, India

राधाकृष्णन ने भारतीय दर्शन परंपरा को समझने का प्रयास किया| महात्मा गांधी, रवींद्रनाथ ठाकुर, रामकृष्ण और विश्वनाथ ऐसे चिंतनकार पश्चात चिंतन धारा के पूर्णरूप से प्रभावित नहीं हुए हैं| वह अपने विश्वास से आस्थाओं और भावनाओं के लिए लज्जित नहीं होते| कला, संगीत, साहित्य चिंतन पर अनेक उच्च स्तरीय कृतियाँ, जिनको आधुनिक चिंतन के सार्थक प्रयास में देखने की कोशिश की गई है| भारतीय ज्ञान परंपरा में संरक्षित ज्ञान-विज्ञान एवं तकनीकी जो शोध का विषय है| पूर्ण रूप से एक प्राचीन संस्कृति के ज्ञान के रूप में समाहित है| भारतीय ज्ञान प्रणाली के आधार पर संचित विज्ञान की प्रमाणिकता को इस शोध पत्र में देखने का प्रयास किया गया है।

मुख्य शब्द- सामाजिक पूँजी, भारतीय ज्ञान परंपरा, शिक्षक शिक्षा, विज्ञान एवं तकनीकी।

प्रस्तावना

भारत एक विशाल देश है, जिसकी अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक विरासत है। इस बात में कोई संदेह नहीं है कि, यह सांस्कृतिक विरासत शिक्षा की दृष्टि से अत्यंत उन्नत है। शिक्षा वह ज्योति है, जो जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में हमारा पथ-प्रदर्शन करती है। प्राचीन भारतीय मनीषी शिक्षा के इस महत्व को भलीभांति समझ चुके थे| वह जानते थे कि, व्यक्ति का सर्वांगीण विकास, समाज की चतुर्मुखी उन्नति तथा सभ्यता की बहुमुखी प्रगति शिक्षा के द्वारा ही संभव है। यही कारण है कि उन्होंने एक सुगठित शिक्षा प्रणाली का प्रतिपादन किया, जिससे समाज पर सकारात्मक प्रभाव पड़े। भारतीय शिक्षा प्रणाली भारतीय ज्ञान परंपरा की आधारशिला थी। भारतीय ज्ञान परंपरा भारत की मानवी सभ्यता में एक अनुपम कृति है। भारतीय ज्ञान परंपरा [2]पर आधारित शिक्षा प्रणाली के विकास की झलक प्राचीन वैदिक परंपरा से दिखाई पड़ती है। भारतीय ज्ञान का आधार वेदों को माना गया है, जो प्राचीन ग्रंथो का एक संग्रह है| लगभग 1500 ईसवी पूर्व का है। वेद संसार के प्राचीनतम ग्रंथ माने गए हैं| ऋग्वेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद और सामवेद जिनमें उस समय की खोज भूमि, विज्ञान, सूत्र,ज्ञान- विज्ञान सूत्र रूप में संग्रहित है। इस समृद्ध भारतीय ज्ञान प्रणाली को समय के साथ आगे बढ़ाने में वेदांत, जैन, गीता ,न्याय, शंकर एवं योग दर्शन के साथ-साथ भारतीय ज्ञान प्रणाली में विरोधाभास को आत्मसात करते हुए चार्वाक दर्शन को अपने आप में समाहित कर आगे बढ़ी। जिसमें भारतीय मूल्य भावनात्मकता, समग्रता और सामूहिकता को सदैव बनाए रखा। आज के समय जब हम देखते

[2] **भारतीय ज्ञान** परम्परा, भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय का एक प्रभाग है जिसका लक्ष्य स्वदेशी **भारतीय ज्ञान** को बढ़ावा देना है।

हैं, तो वैदिक साहित्य, भारतीय संस्कृति और आध्यात्मिकता का आधार है| वैदिक साहित्य, दार्शनिक शिक्षा, नैतिक शिक्षा सिद्धांत और व्यवहारिक ज्ञान के साथ-साथ भारत की चिर-परिचित संस्कृति की गहन समझ और ज्ञान में अंतर दृष्टि प्रदान कर मानवीय जीवन शैली को आकार देकर साहित्य, कला, संगीत, वास्तुकला और शास्त्र सहित विभिन्न क्षेत्रों को प्रभावित किया है। आज योग और ज्ञान की शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक उन्नयन में भूमिका को वैश्विक मान्यता प्राप्त है। ***भारतीय ज्ञान दर्शन*** [3] आत्म चिंतन का अनोखा उदाहरण है। ***न्याय दर्शन*** तर्क और ज्ञान मीमांसा पर केंद्रित है| जबकि ***वैषेशिक दर्शन*** परमाणुओं और उनके संयोजन के विश्लेषण के माध्यम से वास्तविकता का पता लगाता है। आर्यभट्ट और ब्रह्मगुप्त जैसे प्राचीन भारतीय गणितज्ञों ने अंकगणित, बीजगणित और ज्यामिति में महत्वपूर्ण खोज की। इतनी समृद्ध हमारी भारतीय ज्ञान परंपरा होने के बावजूद आज जिस मुकाम पर आ खडी हुई हैं, यह चिंता का विषय है, क्योंकि सभ्यता का विकास आदान-प्रदान की क्रिया से प्रेरित रहा है। एक स्थान के प्राणी ने जिज्ञासा बस किसी नवीन स्थान की खोज की, जहाँ वह अपने देश के सांस्कृतिक पहलुओं की पहचान दूसरे को कराने में सफल हुआ| वहाँ के रहन-सहन व संस्कृतियों को अपने देश में पहुँचने की प्रक्रिया सदियों से मानवी सभ्यता के विकास क्रम में चलती रही है। जो किसी भी ज्ञान परंपरा का वाहक के रूप में कार्य करेंगे। आज सबसे बड़ा प्रश्न यह आता है, कि इतनी समृद्ध ज्ञान परंपरा वैज्ञानिक प्रमाण के आधार पर क्यों नहीं अपने आप को स्थापित कर पाई | नि:संदेह तत्कालीन समय की सामाजिक पूँजी का कमजोर होना भी माना जा सकता है| सामाजिक पूँजी एक ही समूह या एक ही पृष्ठभूमि से होने वाले संबंधों के बीच का ऐसा बंधन स्थापित होता है, कि लोग भावनात्मक समर्थन महसूस करते हैं। यह संबंध इतने मजबूत हो जाते हैं कि, विश्वास और बंधन की भावना पैदा होती है। ***कॉल मैन(1988***) संबंध या मजबूत नेटवर्क संबंध के बारे में विचार के संकेत देते हैं कि, लोगों के बीच और मजबूत संबंध, संगठनात्मक संरचना में एक बेहतर सामूहिक कार्य होते हैं| किसी भी देश की मानवीय पूंजी, ज्ञान पूंजी, आर्थिक पूंजी की दृष्टिकोण से कितना ही समृद्ध हो, जब तक सामाजिक पूंजी के जरिए उपरोक्त पूंजी को गतिमान नहीं बनाया जाएगा वह वही समाप्त हो जाएगी| भारतीय ज्ञान परंपरा के साथ सामाजिक पूंजी को ज्ञान प्रणाली के प्रति संरचनात्मक और उसका नेटवर्किंग,समाजीकरण, आदर्श, सम्मान, विश्वास, साझा दृष्टिकोण, संज्ञानात्मकता और भाषा की पहुंच के जरिए सामाजिक पूंजी मजबूत होती है। भारत के इतिहास पर नजर डालें तो स्पष्ट पता चलता है कि, स्वयं की अति विशिष्ट सांस्कृतिक विरासत के बावजूद

[3] भारतीय दर्शन, https://wp.nyu.edu/virtualhindi/indian-phylosophies/

विदेशियों के आगमन से समय-समय पर यहाँ की संस्कृति को बचाए रखने के लिए संघर्ष करना पड़ा| राष्ट्र के महापुरुषों ने ऋषि, मनीषी, आदिगुरु शंकराचार्य, चरक, सुश्रुत, महावीर स्वामी, महात्मा गौतमबुद्ध, आचार्य विनोबाभावे, आचार्य अरविंदो, रविंद्रनाथ टैगोर, स्वामी विवेकानंद एवं महात्मा गांधी के शैक्षिक दर्शनों ने सामाजिक पूंजी के जरिए अपनी ज्ञान प्रणाली को संरक्षित करने का प्रयास किया। परंतु नई दिल्ली संस्कृति उत्थान न्यास के वेबीनार में ***डॉ ज्योति मिश्रा*** जी ने कहा कि भारतीय ज्ञान परंपरा का सामान्य जनमानस तक न पहुँच पाना दुखद रहा है[4], यह कमजोर सामाजिक पूंजी की ओर इशारा करता है। और ***डॉ अनुराग देशपांडे जी ने*** चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि, भारत में ही भारतीय ज्ञान परंपरा पर चर्चा करना दुर्भाग्यपूर्ण है। 'जो अप्राप्त है उसे पा लेना कठिन नहीं है,परंतु जो प्राप्त था उसे खोकर फिर पाना अत्यधिक कठिन है**(महादेवी वर्मा)**। निहसंदेह तौर पर भारतीय ज्ञान परंपरा को सामाजिक पूंजी के जरिए इस गौरवशाली विरासत को समझना है| और राष्ट्रीय संदर्भ में स्थापित करने की जरूरत है| आधुनिक ज्ञान-विज्ञान के युग में अन्य वैश्विक ज्ञान पर ज्ञान परंपराओं को बगैर सही ढंग से समझे तथा तार्किकता की कसौटी पर कसने या पूरी तरह खारिज करना तथा भारतीय ज्ञान प्रणाली की समग्रता को अपना लेना उचित नहीं होगा, असल चुनौती प्राचीन ज्ञान-विज्ञान को आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण के संदर्भों में पुनर्व्याख्या करने और समझने की आवश्यकता महसूस की गई है।

शोध प्रश्न-

1.क्या सामाजिक पूंजी भारतीय ज्ञान परंपरा के विकास में सहायक है?

2.भारतीय ज्ञान परंपरा और शिक्षक शिक्षा में सामाजिक पूंजी का क्या संबंध है?

3.भारतीय ज्ञान परंपरा एवं विज्ञान तकनीकी के आयाम में सामाजिक पूंजी किस प्रकार सहायक है?

उद्देश्य-

1.सामाजिक पूंजी के परिप्रेक्ष्य में भारतीय ज्ञान परंपरा का अध्ययन करना|

2.भारतीय ज्ञान परंपरा और शिक्षक शिक्षा के मध्य सामाजिक पूंजी की भूमिका का अध्ययन करना|

[4]*डॉ ज्योति मिश्रा* नई दिल्ली संस्कृति उत्थान न्यास

3.भारतीय ज्ञान परंपरा एवं विज्ञान तकनीकी के आयाम में सामाजिक पूंजी का विश्लेषण करना|

परिकल्पनाएं -

1.सामाजिक पूंजी भारतीय ज्ञान परंपरा के विकास में सहायक होती है।

2.सामाजिक पूंजी भारतीय ज्ञान परंपरा और शिक्षक शिक्षा के मध्य सकारात्मक भूमिका का विकास करती है।

3.भारतीय ज्ञान परंपरा एवं विज्ञान तकनीकी के आयाम को जानने में सामाजिक पूंजी सहायक होती है

शोध विधि -

प्रस्तुत शोध में गुणात्मक अनुसंधान के अंतर्गत वर्णनात्मक शोध विधि को प्रयोग में लिया गया, जिसके अंतर्गत साहित्य सर्वेक्षण से प्राप्त निष्कर्ष और शिक्षाशास्त्री द्वारा दी गई परिभाषाओं संगोष्ठी,एवं वेबिनार में प्रबुद्ध व्याख्यताओ के विचारों को आधार बनाकर विषय-वस्तु विश्लेषण के जरिए संबंधित चरों को जानने का प्रयास किया गया है।

भारतीय ज्ञान परंपरा-

भारतीय ज्ञान परंपरा भारत के आदिकाल से चलकर सत्य सनातन की यात्रा काविवरण है। भारतीय ज्ञान परंपरा वैदिक एवं उपनिषद काल में थी, बौद्ध एवं जैनकाल में भी रही| विभिन्न विश्वविद्यालयों की स्थापना और शिक्षा व्यवस्था से स्पष्ट परिलक्षित होता है, कि भारत न केवल एक ऐतिहासिक देश है, बल्कि यहाँ की संस्कृति विभिन्न आयामों में अपने आप को बांधकर रखी है। महान ऋषियों, मुनियों ने भारत में जन्म लिया। यदि ज्ञान परंपरा की बात करते हैं, तो हमारे मन में सर्वप्रथम पहला शब्द वेद आता है| वेदों में सामाजिक व्यवस्था, नीति आदि का समावेश है। ***डॉ रवींद्रनाथ टैगोर ने कहा है*** कि भारत में एक अद्भुत बात है, कि यहाँ की संस्कृति [5]के मूल स्रोत वन है, नगर नहीं यहाँ मनुष्यों को पेड़, पौधों, झीलों, नदियों के संपर्क में रहने का अधिक अवसर प्राप्त हुआ| इन वनों में मनुष्य रहता था, खुला आकाश तथा एकांत सुलभ था| कोई भीड- भड़क्का, धक्का-मुक्की नहीं थी| **(त्यागी एवं पाठक,2009:**

[5] *डॉ रवींद्रनाथ टैगोर*

01)। ज्ञान परंपरा की अपनी विशेषताएं थी| सीखने का स्थान, ग्रंथ और उनके सिद्धांत है। भारत हमेशा से ज्ञान परंपरा और ज्ञान संस्कृति के लिए जाना जाता है। प्राचीन सभ्यता ज्ञान के क्षेत्र में भारत के लिए चिंतनशील एवं शोध के लिए अच्छा अवसर है| यदि हम ज्ञान की बात करें तो यह भाषा, दर्शन, अचार-विचार,संयुक्त ज्ञान की सटीकता के अंतःकरण पर आधारित है। भारतीय ज्ञान परंपरा को आगे बढ़ाने के लिए आचार्य, ऋषियों, गन्थों, रीतिरिवाजों की एक अद्भुत श्रृंखला चल रही थी| गुरुकुल-प्रणाली के माध्यम से अध्ययन-अध्यापन होता रहा है| विद्यार्थियों को वेद, वेदांग, संस्कृति और स्तुति के बारे में सिखाया जाता था। गुरु-शिष्य परंपरा थी। वैदिक काल से ज्ञान परंपरा अत्यंत उत्कृष्ट थी| समृद्ध शिक्षा प्रणाली के जरिए देखा जाए तो, भारतीय ज्ञान परंपरा में परा विद्या और अपरा विद्या के ज्ञान को वर्णित किया गया है। जो भौतिक जगत के ज्ञान और आध्यात्मिक जगत के ज्ञान पर बल प्रदान करती है। ***वैशेषिक दर्शन*** की बात करते हैं यहाँ पर ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास पर बात की गई है| ज्ञान योग और कर्म योग के पालन को आदि से अंत तक माना गया है। अपितु वेदों में व्यक्ति के व्यक्ति के प्रति, व्यक्ति के समाज के प्रति, और व्यक्ति के राष्ट्र के प्रति कर्तव्य की स्पष्ट स्पष्ट की गयी हैं| माता-पिता के अपनी संतान के प्रति एवं पत्नी की अपने पति के प्रति, गुरुओं के अपने शिष्यों के प्रति और शिष्यों के गुरुओं के प्रति, आचरण सुनिश्चित किए गए। यहाँ तक राजा के प्रजा के प्रति और प्रजा के राजा के प्रति, कर्तव्य एवं आचरण को भी सुनिश्चित किया गया है। ***उपनिषद के वृहदारायण उपनिषद*** ने दान और दया की शिक्षा दी है। ***छान्दोग्य उपनिषद*** तपस्या, दान, अहिंसा और सत्य वचन को आध्यात्मिक उन्नति के लिए आवश्यक मानता है। ***जैन दर्शन*** ने मनुष्य को सम्यक दर्शन, सम्यक ज्ञान और सम्यक चारित्र का उपदेश देकर सभी कों कल्याण की ओर प्रवृत किया है। पांच महाव्रतों के पालन और चार काषायों के त्याग का उपदेश सत जीवन की प्राप्ति में सहायक बताया है**(लाल,2018::62)** ***बौद्ध दर्शन*** ने चार आर्य सत्य त्रिरत्न और आर्य अष्टांग मार्ग [6]को बताकर भारतीय ज्ञान परंपरा को समृद्ध बनाए रखा**(लाल,2018:78)**। ***गीता दर्शन*** जो मनुष्य स्वधर्म का पालन बिना किसी फल की इच्छा के करता है और फल भगवान को समर्पित करते हैं| वे मनुष्य कभी ऐसा कार्य नहीं करेंगे, जो अन्य प्राणी को कष्ट हो और कहा गया है, कि काम, क्रोध, लोभ और मोह से दूर रहकर अपने कर्तव्यों का निष्ठा पूर्वक कार्य करना भारतीय ज्ञान परंपरा की शैली रही है**(लाल,2017:78)** ***न्याय दर्शन*** आम तत्व के ज्ञान के लिए योग साधन मार्ग को बताया यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि के महत्व को स्वीकार किया

[6] अष्टांगिक मार्ग, बौद्ध धर्म की एक शिक्षा है. यह आध्यात्मिक पथ पर चलने का एक तरीका है|

गया(**लाल,2017::89**) यहाँ तक कि भारतीय ज्ञान परंपरा की महत्ता को ***मैकाले के कथन (02-02-1835) के पत्र से अंदाजा लगाया जा सकता है| मैकाले कहता है कि, मैं भारत के कोने-कोने में घूमा। मुझे एक भी व्यक्ति ऐसा नहीं दिखाई दिया, जो भिखारी हो,चोर हो। इस देश में मैंने इतनी धन-दौलत देखा है, इतने ऊंचे चारित्रिक, आदर्श. गुणवान मनुष्य देखे हैं, कि मैं नहीं समझता कि हम इस देश को जीत पाएंगे। जब तक इसकी रीड की हड्डी को नहीं तोड़ देते। जो इसकी आध्यात्मिक संस्कृति और इसकी विरासत है| इसलिए मैं प्रस्ताव रखता हूँ, कि हम पुरातन शिक्षा व्यवस्था और संस्कृति को बदल डालें, क्योंकि यदि भारतीय सोचने लगे कि जो भी विदेशी है और अंग्रेजी है वही अच्छा है| और उन्हें यह महसूस हो उनकी अपनी चीजों से बेहतर है|तो वह अपने आत्म गौरव और अपनी ही संस्कृति को नहीं समझ पाएंगे| वैसे ही बन जाएंगे जैसे हम चाहते हैं| एक पूरी तरह से दमित देश।*** भारतीय ज्ञान परंपरा की झलक उपरोक्त पत्र में देख पा रहे हैं और वह कामयाब भी हुए आज जरूरत आ पड़ी है भारत की भारतीयता का ज्ञान करना।

सामाजिक पूँजी-

सामाजिक पूंजी किसी विशेष समाज में रहने और काम करने वाले लोगों के बीच संबंधों का नेटवर्क। हैं। जो उस समाज को प्रभावी ढंग से काम करने में सक्षम बनाता है। पारस्परिक संबंध, पहचान की साझा-भावना, साझा-समझ, साझा-मानदंड, साझा-मूल्य, विश्वास, सहयोग और पारस्परिता के माध्यम से सामाजिक समूह अपने कार्य करते हैं। सामाजिक पूंजी का उपयोग विविध समूह के बेहतर प्रदर्शन, उद्यमी फर्मों की वृद्धि, बेहतर प्रबंधकीय प्रदर्शन और राजनीतिक गठबंधन से प्राप्त मूल्य और समुदायों के विकास को समझने के लिए किया गया है। सामाजिक पूंजी को परिभाषित करने का शुरुआती प्रयास इस बात पर केंद्रित था, कि सामाजिक पूंजी किस हद तक संसाधन के रूप में कार्य करती है, चाहे वह सार्वजनिक भलाई के लिए हो या खुद के लाभ के लिए हो| ***रॉबर्ट.डी. पुटनाम(1993***) में सुझाव दिया कि सामाजिक पूंजी समुदायों और राष्ट्रों में भी सहयोग करती है और पारस्परिक रूप से सहायक संबंधों को सुविधाजनक बनाती हैं। ***नाहापिकूट और धोबला(1998)*** ने बताया बौद्धिक पूंजी के निर्माण में सामाजिक पूंजी अपनी भूमिका अदा करती है और सुझाव देती है, कि सामाजिक पूंजी तीन समूहों के संदर्भ में जानी जाती है, संरचनात्मक, संबंधात्मक और संज्ञानात्मक पूंजी[7]। ***पियरे बोर्दियो*** पूंजी के तीन रूपों के अंतर करते हैं| आर्थिक पूंजी, संस्कृति पूंजी और सामाजिक पूंजी|

[7] *नाहापिकूट और धोबला(1998)*

वह सामाजिक पूंजी को वास्तविक या संभावित संसाधनों को समूचे रूप में परिभाषित करते हैं। ***थॉमस सैंडल ने*** इसे सभी नेटवर्क के सामूहिक मूल्य और इस नेटवर्क से एक दूसरे के लिए काम करने की प्रवृत्ति के रूप में परिभाषित करते हैं। इस दृष्टिकोण के आधार पर सामाजिक पूंजी सामाजिक नेटवर्क से जुड़े विश्वास, पारस्परिकता, सूचना और सहयोग से मिलने वाले विशिष्ट लाभ पर जोर देती है। अब हम अपनी भारतीय ज्ञान परंपरा को देखते हैं, तो सामाजिक पूंजी की समग्रता उसमें दिखाई देती है। संयुक्त-परिवार प्रणाली, गुरु-शिष्य परंपरा, लघु एवं कुटीर उद्योग, वसुधैव-कुटुंबकम, विभिन्न धर्मों का समावेशन, प्राचीन शिक्षा प्रणाली, विचार-अचार और तर्कों को तत्कालीन महापुरुषों के द्वारा अपनी ज्ञान परंपरा को साझा करना और आगामी पीढ़ियों को अपनी संस्कृति और ज्ञान प्रणाली के साथ तैयार करने में सामाजिक पूंजी ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई| जिस राष्ट्र में ज्ञान विचार को जितना जनमानस तक प्रचार प्रसार किया जाएगा तब उसकी उपयोगिता की परख एवं जांच सामाजिक पूंजी से होती है। भारतीय ज्ञान परंपरा के संदर्भ में इतनी संवर्धता और विश्व ज्ञान[8] के भंडार वेद, उपनिषद, पुराण, महाकाव्य संरक्षित रहे, परंतु उनका सामान्य जनमानस तक न पहुंचना, ज्ञान का केंद्रीकरण होना, आज भारतीय ज्ञान पर चिंतन करने की अवधारणा कमजोर सामाजिक पूंजी का परिचायक है| पाश्चात्य ज्ञान जिसका प्रचार-प्रसार जनमानस तक पहुँच, विश्वास और मूल्य सहित नेटवर्क स्थापित करके उपयोगिता को सिद्ध करना मजबूत सामाजिक पूंजी के रूप में देखा जा सकता है।

भारतीय ज्ञान परंपरा और वैज्ञानिक तकनीकी-

क्या यह आश्चर्यजनक नहीं है, कि जिस देश में आधुनिक विज्ञान केवल पिछली शताब्दियों में ही विचार कर सका हो उसकी उपस्थिति भारत में सदियों से केवल चिंतन में ही नहीं थी, बल्कि वह विज्ञान के अनेक क्षेत्रों में ऐतिहासिक योगदान दे रही थी। वैचारिकता को व्यवहारिकता में परिवर्तित कर उन्होंने गणित और विज्ञान की ठोस नीव रखी। पृथ्वी पर मनुष्य का जीवन प्रकृति पर निर्भर है| प्रकृति केवल मनुष्य की ही नहीं, अन्य जीवधारियों की आवश्यकताओं की पूर्ति करती है(**भटनागर:2022**) टाइम्स एंड स्पेस की समझ के आधार पर उन्होंने भौतिक संरचनाओ (ब्रह्मांड) को प्रस्तुत किया और गणनायें की जो आज के विज्ञान में भी खरी उतरती हैं। जब आर्यभट्ट, ब्रह्मगुप्त, बोधायन, भास्कराचार्य, कनाद, सुश्रुत, चरक, भागवत जैसे मनुष्यों

[8] अधिक टिकाऊ, शांतिपूर्ण और न्यायपूर्ण विश्व का निर्माण करना https://www.worldlearning.org/

के योगदान को सही ढंग से समझा जाय, तब भारत की वैज्ञानिकता की कमी को केवल हास्यप्रद निष्कर्ष ही समझ जाएगा| हां यह निश्चित तौर पर हम समझ सकते हैं, कि हमारे इन मनीषियों, ऋषियों और महापुरुषों के द्वारा की गई खोजों का प्रचार-प्रसार या विचारों को समझ पाना चिंतन का विषय रहा, जो कहीं ना कहीं सामाजिक पूंजी का प्रबल पक्ष था, संपर्क स्थापित करना और अपने विचारों को विश्व के विश्व पटल पर सामने लाना और प्रत्येक जनमानस को यह स्थापित करना कि,यह भारतीयता की खोज है। ***जल चक्र [9]का वर्णन किया गया है की जल-वर्षा द्वारा पृथ्वी को और अग्नि द्वारा आकाश को ऊपर उठाने का काम आता है| बादलों के टकराने से भूमि पर उपस्थित पर्जन्य के रूप में आवश्यक समुद्र के प्रमुख भंडारों में होता है(ऋग्वेद:१६४::५१) शुद्ध मोती की पहचान क्रियाविधि को भी वर्णित किया गया है, जिसमें बताया गया है, कि मोती को पहले क्षारयुक्त नमक और गोमूत्र में डालें फिर अग्नि या सूखे कपड़े में लपेटकर सुखायें फिर मोती को हाथ में लेकर चावल के साथ घिस ले यह कृत्रिम रूप से चमकीला और प्रज्वलित करने में आसान हो जाएगा, अगर कृत्रिम मोती हैं, तो उसमें चमक नहीं आएगी यदि शुद्ध मोती है तो वह चमकने लगेगी***(**युक्तकल्पतरु**) *राइनो प्लास्टिक का प्लास्टिक सर्जरी [10]शारीरिक स्थान विभाग, भारतीय ज्ञान परंपरा का ज्ञान है, जिसमें बताया गया है कि अब मैं तुम्हें शत्रु की नाक बंद करने की विधि बताऊंगा, जिसकी नाक एक पथ के आकार की है| फिर उसने गाय के मैप से गाय का खुर काट दिया और नाक के जिस हिस्से को ढकना है, उसे पहले पत्ते से नाप लेना चाहिए, फिर आवश्यक आकार का त्वचा का एक टुकड़ा गाल या माथे से कटकर नाक में ढकने के लिए मोड देना चाहिए* (**सुश्रुतसंहिता: शारीरिक-स्थान)** मनुष्य को दिन में केवल दो बार भोजन करना चाहिए एक बार सुबह और एक बार शाम को यह उपवास के समान लाभ देता है| यह वैदिक आदेश है(**महाभारत:शांतिप्रिय)** जिंक प्रगलन-रस प्राचीन काल में भारतीयों ने दी वसुन्द,, ड्रिफ्टरेक्टीको डेस्टिनेशन पेंस की आधुनिक तकनीक अपनाई| जिंक का मेल्टिंग पॉइंट 40 डिग्री सेंटीग्रेड ओसुड है, इसलिए तरल धातु का उत्पादन करने के लिए 500 डिग्री सेंटीग्रेड के आसपास निष्कर्षण ही एकमात्र व्यवहार्य विधि है, जिससे इसके पुनर्जन्म को रोका जा सकता है। दिल्ली लौह स्तंभ [11](पांचवीं शताब्दी ईस्वी) में जो शुद्ध लोहे का(90.72%) से बना हुआ है| यह स्तंभ इतने लंबे समय से बना हुआ है और प्रत्येक प्रकार के मौसम की मार चलने में अद्वितीय है| स्तंभ पर पाए गए शिलालेखों से पता चलता है ,कि यह स्तंभ **(गुप्तवंश के चंदीप विक्रमादित्य प्रथम 375 से 414 ई0)** के

[9] ऋग्वेद:१६४::५१

[10] सुश्रुतसंहिता: शारीरिक- स्थान

[11] गुप्तवंश के चंदीप विक्रमादित्य प्रथम 375 से 414 ई0

शासनकाल के दौरान बनाया गया था, जो आज भी अपनी शुद्धता और परख के लिए भारतीय ज्ञान प्रणाली का साक्षात उदाहरण है।

भारतीय ज्ञान परंपरा एवं शिक्षक शिक्षा-

शिक्षा के लिए शिक्षक की आवश्यकता और ज्ञान के लिए गुरु की**(दीक्षित, हृदय नारायण:2024:: हिंदुस्तान समाचार पत्र)** श्री गुरु चरण सरोज रज, निज मन मुकुर सुधार(**तुलसीदास:रामचरितमानस**) आचार्य और शिष्य साथ-साथ प्रार्थना करते हैं सहनोभुनुक्त,सहनावतु[12] शब्द आज भी जीवंत है(**उत्तर वैदिक काल:हिंदुस्तान समाचार पत्र)** समाज में शिक्षक का स्थान अनादिकाल से ही पूजनीय है। शिक्षक ही शिक्षा का प्रमुख आधार होता है| शिक्षक राष्ट्र के समग्र विकास के साथ-साथ नागरिकों को सही दिशा और मार्गदर्शन देना और उन्हें गढ़ने का कार्य भी करता है। जब छात्र पूर्णता प्राप्त कर लेता है, तो वह जीवन पथ पर आने वाली चुनौतियों का आसानी से सामना करने में सक्षम हो जाता है। शिक्षक किसी भी देश का राष्ट्रीय निर्माता होता है| अब हम शिक्षक- शिक्षा के क्रमिक विकास पर दृष्टि डालते हैं तो हमारी प्राचीन परंपरा में शिक्षक-शिक्षा का संरचनात्मक प्रशिक्षण युक्त ढांचा नहीं था| लेकिन बिना शिक्षक की सामाजिक पूंजी के यह ज्ञान परंपरा का गतिमान होना काल्पनिक माना जा सकता है| इसलिए हम अपनी ज्ञान परंपरा के आधार पर जब वैदिक कालीन शिक्षक-शिक्षा को देखने का प्रयास करते हैं। पाते हैं कि उस समय कक्षा-नायक की पद्धति प्रचलन में थी। इस पद्धति में उच्च कक्षाओं के बुद्धिमान छात्र जिनको नायक कहा जाता था, निम्न कक्षाओं के छात्रों को पढाते थे| जिसके दो मुख्य लाभ थे। शिक्षक की अनुपस्थिति में शिक्षण कार्य और कक्षा-नायक कुछ समय के बाद शिक्षण कार्य में प्रशिक्षित हो जाते थे **(त्यागी,2009:13)** अंग्रेजी शिक्षाविद बेल और लेंकास्टर ने भारत की कक्षा-नायक की पद्धति से प्रभावित होकर अपने देश में सूत्रपात किया**(त्यागी:200::13**) प्राचीन भारतीय संस्कृति के आधार पर शिक्षण संस्थाएँ जिनमें शिक्षक की कार्यशैली को देखा जा सकता है, जो सामाजिक पूंजी के जरिए ज्ञान परंपरा को प्रसारित करने का कार्य कर रहे थे।

टोल- संस्कृत की शिक्षा दी जाती थी, जिसमें एक शिक्षक कार्य करता था।

चरण- वेद के एक अंग की शिक्षा दी जाती थी| एक चरण में एक शिक्षक होता था।

[12] उत्तर वैदिक काल:हिंदुस्तान समाचार पत्र

घटिका- घटिका में धर्म और दर्शन की शिक्षा दी जाती थी| एक घटिका में अनेक शिक्षक होते थे।

परिषद- परिषद में विभिन्न विषयों की शिक्षा दी जाती थी| एक परिषद में साधारण 10 शिक्षक होते थे।

गुरुकुल- गुरुकुल में वेद, साहित्य, धर्मशास्त्र आदि की शिक्षा दी जाती थी| एक गुरुकुल में एक(01) शिक्षक होता था।

विद्यापीठ- विद्यापीठ में व्याकरण और तर्कशास्त्र की शिक्षा दी जाती थी| एक विद्यापीठ में अनेक शिक्षक होते थे।

विशिष्ट विद्यालय- विशिष्ट विद्यालय में एक विशिष्ट विषय की शिक्षा दी जाती थी और एक शिक्षक होता था।

मंदिर महाविद्यालय- किसी मंदिर से संम्बंद्धित मंदिर महाविद्यालय में धर्म, दर्शन, वेद, व्याकरण की शिक्षा दी जाती थी| एक मंदिर महाविद्यालय में अनेक शिक्षक होते थे।

ब्राह्मणमहाविद्यालय- इनको चतुष्पदी कहा जाता था| इसमें चारों शास्त्रों, दर्शन, पुराण, कानून और व्याकरण की शिक्षा दी जाती थी, एक शिक्षक कार्यकर्ता था।

विश्वविद्यालय- उच्च शिक्षा की कुछ संस्थाओं ने कालांतर में विश्वविद्यालय का रूप ग्रहण किया| इनमें धार्मिक शिक्षा के अतिरिक्त वाणिज्य, चित्रकला, चिकित्सा शास्त्र आदि की भी शिक्षा विभिन्न शिक्षकों द्वारा दी जाती थी| बनारस, नालंदा और तक्षशिला के विश्वविद्यालय सबसे अधिक प्रसिद्ध थे।

इस प्रकार हम देख पाते हैं कि उपरोक्त शिक्षण कार्य शिक्षक-शिक्षा का अस्तित्व लिए हुए हैं। आगे जब हम ***जैन दर्शन*** में शिक्षक-शिक्षा [13]के लिए जाते हैं, तो बताया गया कि शिक्षक के लिए उपाध्याय और आचार्य शब्दों का प्रयोग हुआ है| उपाध्याय उसे कहा जाता है, जो अध्यापन कार्य करता है और आचार्य उसे कहा जाता था जो आचरण को प्रभावित करता है **(लाल,2018:61)** ***बौद्ध शिक्षा दर्शन में*** बताया गया कि वही व्यक्ति शिक्षक हो सकता था, जिसने चार आर्य सत्य और अष्टांग मार्ग का अनुसरण किया हो शिक्षा देने का कार्य केवल भिक्षुओं का था **(लाल,2018:71)** ***गीता के अनुसार*** शिक्षक को आत्मज्ञानी होना चाहिए, शिष्यों

[13] *लाल,2018:61*

के साथ एकात्म भाव रखना चाहिए **(लाल,2018:83)**। ***न्याय दर्शन*** शिक्षक को आप्त शब्द के अधिकारी के रूप में देखना चाहता है| उसे प्रमाण और उसके भेद का स्पष्ट ज्ञान हो**(लाल,2017:97)** ***सांख्य दर्शन*** शिक्षक से यह आशा करता है, कि उसे ज्ञान प्राप्ति के साधनों का स्पष्ट ज्ञान हो और वह उनकी सहायता से शिष्यों में ज्ञान का विकास करने में सक्षम हो। ***योग दर्शन*** शिक्षक को ज्ञानी के साथ-साथ अष्टांग योग क्रियायों में दक्ष होने पर बल देता है**(लाल,2018:127)**। ***महर्षि अरविंद*** ने शिक्षक [14]के विषय में कहा था, शिक्षक राष्ट्र की संस्कृति के चतुर माली होते हैं, संस्कारों की प्राणियों में घास डालते हैं, और उनमें श्रम से शक्ति में परिवर्तित करते हैं(**ज्ञान अभ्युदय, क्रांति समाचार पत्र)**। इस प्रकार शिक्षक-शिक्षा हमारे समाज के विभिन्न सांस्कृतिक, सामाजिक और नैतिक विचारधारा के संरक्षक होती हैं| शिक्षक ही संस्कृति, संरचना को छात्रों में प्रयोग कर समाज की स्थिरता और विकास में योगदान देता है, क्योंकि शिक्षक ही वह कड़ी है, जो शिक्षा को संजीव बनाता है| वह केवल पाठ्यक्रम की शिक्षा ही नहीं, जीवन मूल्य की भी शिक्षा देता है। भारत में शिक्षा के लिए भारतीय संप्रदाय का ज्ञान भारतीय मूल्य, समान शिक्षा, शिक्षा-संवाद, शिक्षा का प्रसार और स्वदेशी भाव के अध्ययन से समाज का कार्य आज भी शिक्षक अपनी सामाजिक पूंजी के माध्यम से कर रहे हैं|

आवश्यकता एवं महत्व-

भारत का ज्ञान एवं विज्ञान यहाँ की सामाजिक जरूरत की उपज रही है। हमारे यहाँ यही परंपरा रही है| लेकिन आज हम इसमें पीछे हो रहे हैं। हमारे पिछड़ने और उदासीन रहने के कारण ***तिब्बती आध्यात्मिक नेता दलाई लामा कहते हैं***, कि भारत प्राचीन ज्ञान की उपेक्षा कर रहा है और पश्चिमी संस्कृति की ओर बढ़ रहाहै। आधुनिक भारतीय बहु-पश्चिमी है| भारतीयों को भारत के प्राचीन ज्ञान पर अधिक ध्यान देना चाहिए। आधुनिक भारतीयों को अपने ज्ञान को नहीं भूलना चाहिए| संस्कृति किसी समाज में गहराई तक व्याप्त गुणों के समग्र रूप का नाम है। जो तत्कालीन समय के सोचने, विचारने, कार्य-करने, खाने-पीने, बोलने, नृत्य-गायन, साहित्य, कला आदि में झलकता है। संस्कृति का वर्तमान रूप किसी समाज के दीर्घकाल तक अपनी गई पद्धतियों का परिणाम होता है। भारत इस धरती का एकमात्र ऐसा देश है, जो आधुनिक शिक्षा, विज्ञान और प्रौद्योगिकी को जोड़ सकता है। हमें धार्मिक विश्वास को स्पर्श किये बिना शिक्षा में प्राचीन भारतीय ज्ञान के आंतरिक मूल्य को शामिल करना चाहिए| आर्यभट्ट, चरक, कणाद, नागार्जुन, हर्षवर्धन, अगस्त महाराज, ऋषि, शंकराचार्य, आचार्य विनोभा

[14] *महर्षि अरविंद* ज्ञान अभ्युदय, क्रांति समाचार पत्र

भावे, स्वामी विवेकानंद ऐसे महापुरुष हुए हैं, जिन्होंने अपने ज्ञान से विश्व की ज्ञान परंपरा को कुशल शिक्षक के रूप में समृद्ध किया है| भारतीय संस्कृति के महत्वपूर्ण तत्व शिष्टाचार, तहजीब, सभ्य-संवाद, धार्मिक-संस्कार, मान्यताएं और मूल्य आदि| हालांकि आज के परिवेश में हर किसी की जीवन शैली आधुनिक हो रही है| आज जब हम पश्चिमी और भारतीय ज्ञान परंपरा में तुलनात्मक अध्ययन करते हुए पाए हैं कि, पश्चिमी संस्कृति से भौतिकवाद बहुत उन्नत हुआ है, लेकिन यह उन्नति मानसिक खुशहाली को साकार रूप देने से वंचित रह जाती है| इसलिए आज भारतीय ज्ञान परंपरा को शैक्षिक सामाजिक पूंजी की बदौलत समृद्ध कर अपनी अतीत के पृष्ठभूमि की तरफ दृष्टि डालने और इसकी वैज्ञानिक प्रमाणिकता के आधार पर अपने आप को भारतीयता के गौरव को महसूस कराने की आवश्यकता है।

निष्कर्ष-

भारत, संस्कृति और संस्कृत यह तीनों शब्द मात्र नहीं है, अपितु प्रत्येक भारतीय के भाव है। भारतीय संस्कृति के संरक्षण व संवर्धन के लिए भारतीय ज्ञान परंपरा आवश्यक है। कई पहलुओं पर अध्ययन करने से पता चलता है, कि हमारी भारतीय ज्ञान परंपरा वैश्विक ज्ञान की जननी रही है| वेद, उपनिषद, दर्शन, महाकाव्य, ऋषि, मनीषी एवं विद्युत जनों के द्वारा संरक्षित ज्ञान आज के समय में प्रासंगिक है| ***स्वामी विवेकानंद जी*** के द्वारा 1891 में विश्व धर्म सम्मेलन[15] शिकागो में दिया गया, जो अभिभाषण वसुधैव-कुटुंबकम, भाईचारा, प्रेम, सहानुभूति का एक अद्वितीय उदाहरण भारतीय ज्ञान परंपरा का रहा है| निश्चित तौर पर पाश्चात्य संस्कृति भारतीय ज्ञान परंपरा को प्रभावित किया, जिससे हम भारतीयों को एक बार पुनः अपनी ज्ञान प्रणाली से पुनर्जागरण होने की आवश्यकता है| जैसा कि मैकाले ने 3E-English(अंग्रेजी,भाषा), Education(शिक्षा), Employability(रोजगार) के सिद्धांत पर अपनी नीति तैयार कर सामाजिक पूंजी के बल पर राज्य किया| हम आजादी के 75 वर्ष पूरे करने के बाद भी अपनी ज्ञान प्रणाली को शिक्षा नीति के सहारे इन तीन सिद्धांतों पर कार्य नहीं कर पाए| इसी के चलते हम अपने आप को भूलते चले गए| परंतु अब राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 भारतीय ज्ञान परंपरा, प्राचीन और सनातन भारतीय ज्ञान और विचार की समृद्ध परंपरा के आलोक में यह नीति तैयार की गई है| जो समग्र और बहु-विषय शिक्षा की ओर ध्यान आकर्षित करती है| जिसमें सेक्शन-11.1, 11.4, 11.7 और 11.8 में वर्णित है| साथ ही भारतीय भाषाओं, कला और संस्कृति को बढ़ावा देने पर सेक्शन-22 में बात की गई है| इसके साथ ही साथ शिक्षक-शिक्षा

[15] *स्वामी विवेकानंद जी* के द्वारा 1891 में विश्व धर्म सम्मेलन[15] शिकागो में दिया गया, जो अभिभाषण वसुधैव-कुटुंबकम, भाईचारा, प्रेम, सहानुभूति का एक अद्वितीय उदाहरण भारतीय ज्ञान परंपरा का रहा है

के संदर्भ में भी राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 ने 2030 तक भारतीय ज्ञान प्रणाली के आधार पर बहु-विषयक प्रशिक्षण कोर्स को संचालित करने पर बल दिया है| निश्चित तौर पर अब भारतीय ज्ञान परंपरा को शिक्षकों और प्रशिक्षण संस्थान, यू0जी0सी के भारतीय ज्ञान परंपरा के प्रकोष्ठ से सामाजिक पूंजी को मजबूत कर भारतीयों में भारतीयता को महसूस कराने के नवचारी प्रयास किये जा रहे हैं।

सुझाव-

- भारतीय ज्ञान परंपरा के प्रति सामान्य जनमानस में व्याप्त संकुचित विचार को दूर करने का प्रयास किया जाए जैसे पूजा-पाठ, कर्मकांड से आगे भी भारतीय ज्ञान परंपरा है।
- भारतीय ज्ञान परंपरा की स्पष्ट व्याख्या करने के लिए पाठ्यक्रमों में सम्मिलित किया जाए।
- वर्ण व्यवस्था [16]पर आधारित भारतीय समाज की मानसिकता को अभी भी बदलाव लाने की आवश्यकता है।
- रामचरितमानस में वर्णित कुछ जाति-सूचक चौपाइयों की सही व्याख्या करके समाज की भ्रांति को समाप्त करने का प्रयास किया जाए| जिससे भारतीय ज्ञान परंपरा की प्रणाली में लोगों का विश्वास बढ़ेगा।
- भारतीय ज्ञान परंपरा पर आधारित शिक्षा का समाज में कुछ वर्गों तक केंद्रीकरण के बजाय विकेंद्रीकरण पर ध्यान दिया जाए।
- प्रत्येक वर्ग की शिक्षा प्रणाली में भारतीय ज्ञान परंपरा पर आधारित पाठ्यक्रमों को सम्मिलित किया जाए।
- शिक्षक- प्रशिक्षण कोर्स में भारतीय ज्ञान परंपरा की यूनिट को सम्मिलित कर भावी शिक्षकों को तैयार किया जाए।
- भारतीय ज्ञान परंपरा में संरक्षित ज्ञान को प्रकाश में लाने के लिए शोध कार्य को बढ़ावा दिया जाना चाहिए|
- भारतीय ज्ञान परंपरा को संस्कृत के साथ-साथ प्रत्येक भाषा में रूपांतरित करके सामान्य जन-मानस तक सामाजिक पूंजी के जरिए पहुँचाने का प्रयास किया जाना चाहिये।

[16] वर्ण व्यवस्था, हिन्दू धर्म में समाज को चार सामाजिक वर्गों में बांटने की व्यवस्था है: ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र| https://www.google.com/search

- विश्वविद्यालय अनुदान आयोग [17]केंद्र एवं राज्य विश्वविद्यालय में सख्त नियमावली के साथ दिशानिर्देश दे कि हिंदी भाषा के शोध-पत्रों को पूर्ण स्वीकार्यता प्रदान की जाए, जिससे हिंदी भाषी शोधार्थियों में भारतीयता का गौरव बना रहे।
- आचार, विचार और प्रचार-प्रसार को सामाजिक पूंजी के द्वारा ज्ञान परंपरा को सामान्य जन-मानस तक पहुँचा कर समृद्ध किया जाना चाहिए।

सन्दर्भ ग्रन्थ-सूची

Jasmine, B., Singh, Y., Onial, M., & Mathur, V. B. (2016). Traditional knowledge systems in India for biodiversity conservation.

Biswas, S. (2021). Indian Knowledge system and NEP-2020 Scope, Challenges and Opportunity.

Baral, S. Integrating Indian Knowledge Systems for Holistic Development through NEP 2020.

Mandal, B., & Sultana, K. S. (2024). RESHAPING EDUCATION: AN ANALYSIS OF THE IMPACT OF NEP 2020 ON THE INDIAN KNOWLEDGE SYSTEM. *NEW TRENDS OF TEACHING, LEARNING AND TECHNOLOGY| VOLUME 2*, 139.

Sudhakar, K. (2024). India's knowledge system-A needed approach in NEP2020 to regain the deep roots of our nation-India. *GRT Journal of Education, Science and Technology*, *2*(1), 8-14.

Mandavkar, P. (2023). Indian Knowledge System (IKS). *Available at SSRN 4589986*.

Mahadevan, B., & BHAT, V. R. (2022). Introduction to Indian knowledge system: concepts and applications.

Dika, S. L., & Singh, K. (2002). Applications of social capital in educational literature: A critical synthesis. *Review of educational research*, *72*(1), 31-60.

Mishra, S. (2020). Social networks, social capital, social support and academic success in higher education: A systematic review with a special focus on ‘underrepresented’students. *Educational Research Review*, *29*, 100307.

https://www.education.gov.insites/upload_files/mhrd/files/NEP_Final_English_0.pdf

श्रीवास्तव,रश्मि(2012). *स्वामी विवेकानन्द का शिक्षा दर्शन,नीलकमल पब्लिकेशन*: सुल्तान बाज़ार हैदराबाद, पश्चिम विहार न्यू दिल्ली|

त्यागी,गुरुसरंदास (2009). *भारत में शिक्षा का विकास;* श्री विनोद पुस्तक मंदिर,कार्यालय राघव मार्ग ,आगरा|

लाल,रामंबिहरी(2018). *शिक्षा के दार्शनिक एवं सामाजिक आधार:* आर लाल बुक डिपो;मेरठ|

कानिटकर, मुकुल(2022). *भारतीय ज्ञान परंपरा में शिक्षक* https://www.youtube.com/@nitttr-bhopal

प्रो. कपिल कपूर,(2021). *भारतीय ज्ञान परंपरा* https://www.youtube.com/@YoungThinkersForum

दीक्षित,हृदयनारायण(2024). *भारतीय शिक्षा परंपरा और शिक्षक*

https://www.jansatta.com/politics/scientism-in-the-knowledge-tradition/2033138/

सिंह, गीता(2022). *भारतीय ज्ञान परम्परा और राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में प्रासंगिकता, Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal.*

आर्य,अमरेन्द्र(2018). *भारतीय ज्ञान परंपरा सामाजिक जरूरतों की उपज, मीडिया चिंतन* file:///C:/Users/xyzgy/Downloads/mn-68-73%20(1).pdf

तिवारी ,रवीन्द्र नाथ (2024).*भारतीय ज्ञान परंपरा का संवाहक,* https://janabhyudaykranti.in/shikshak-bhartiya-gyan-parampara-ke-samvahak

https://en.wikipedia.org/wiki/Social_capital

Sapna Sharma, 2022. "Indian Knowledge Tradition and Research," Springer Proceedings in Business and Economics,